12.05.2018

पूर्णिया के मरंगा में वीर्य केंद्र के शिलान्यास सामारोह में: माननीय कृषि मंत्री जी का अभिभाषण

आज यहाँ **पूर्णिया के मरंगा में** वीर्य केंद्र के **शिलान्यास** सामारोह में अपने को आप सब के बीच पा कर मुझे विशेष आनन्द एवं ख़ुशी का अनुभव हो रहा है । आजादी के बाद यह पहली सरकार किसानों के विकास के लिए जमीनी स्तर पर ठोस कदम उठा रही है। इसी लक्ष्य से माननीय प्रधानमंत्री जी ने भारत की आजादी की 75वीं वर्ष गांठ 2022 तक किसानों की आय को दोगुना करने का संकल्प देश को दिया है । इस लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु पशुपालन, डेयरी तथा मत्स्य विभाग, भारत सरकार समर्पित है।

बिहार राज्य अपने दुग्ध उत्पादन के लिए जाना जाता है। देश की डेयरी सहकारिताएं किसानों को औसत रूप से अपनी बिक्री का 75 से 80 प्रतिशत प्रदान करती है। बिहार मे कोंफेड या सुधा, सहकारी मंडलियों के माध्यम से किसानो को दूध का मूल्य प्रदान कर रहा है। प्रदेश में 2016-17 के दौरान 87.11 लाख टन दूध (238 लाख लीटर प्रतिदिन) का उत्पादन किसानो के अथक प्रयासों से हुआ । सुधा डेरी प्रतिदिन लगभग 16.27 लाख लीटर दूध संग्रहित कर रही है जो कि राज्य में कुल उत्पादन का लगभग 10% से भी कम है । दूध उत्पादन में प्रदेश अग्रणी प्रदेशो गिना जाता है । पर आधारभूत सुविधाओं की द्रष्टि से अभी भी डेयरी में विकसित राज्यों से काफी पीछे है ।

पशुओ की उत्पादकता राज्य में कम होने के कारण किसानो को अपने परिश्रम का लाभ नहीं मिल पा रहा है । बिहार राज्य में लगभग 1.22 करोड़ गाय तथा 75

लाख भैंसे है । 1.22 करोड़ गायो में से लगभग 68 लाख गाये गैर नस्लीय (नॉन डिस्क्रिप्ट) है जिनकी उत्पादकता 2 किलोग्राम प्रतिदिन से भी कम है । यही हल अन्य प्रदेशों का भी है। इन पशुओं का संवर्धन से बिहार राज्य में दूध उत्पादन तीव्र गति से बढ़ाया जा सकता है और किसानों की आय में वृधि की जा सकती है।

बिहार की देशी नस्लों का प्रतिदिन उत्पादन 3.3 किलोग्राम है जबकि भारत का औसत 3.54 किलोग्राम प्रतिदिन है। संकर नस्ल की गायो का औसत उत्पादन प्रतिदिन 6.53 किलोग्राम है वही पूरे भारत का औसत 7.52 किलोग्राम है। भैसों का प्रतिदिन उत्पादन बिहार राज्य में औसतन 4.3 किलोग्राम है। वही भारत का 5.25 किलोग्राम है ।

भारत सरकार के राष्ट्रीय गोकुल मिशन के घटक है:

1. ***उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि***

    - फील्ड प्रदर्शन रिकॉर्डिंग (एफपीआर) / वंशावली चयन
    - कृत्रिम गर्भधान के लिए उच्च आनुवंशिक वाले साँड़ उपलब्ध करना

2. ***देशी नस्लों का संरक्षण***

    - "गोकुल ग्राम" की स्थापना
    - राष्ट्रीय कामधेनु प्रजनन केंद्र की स्थापना
    - दूध वाले गो एवं महिष वंशी पशुओ की पहचान और स्वास्थ्य कार्ड जारी करना

3. ***देशी नस्लों में कृत्रिम गर्वधन कवरेज का विस्तार***

    - मैत्री केन्द्रों की स्थापना
    - मौजूदा एआई केंद्रों को सुदृढ़ बनाना
    - एलएन भंडारण और परिवहन व्यवस्था को सुदृढ़ बनाना
    - मौजूदा एआई तकनीशियनों का प्रशिक्षण

4. आधुनिक प्रौद्योगिकी द्वारा नस्ल सुधार

- 20 ईटीटी और आईवीएफ प्रयोगशालाओं की स्थापना
- सेक्सड वीर्य उत्पादन
- ई-पशुहाट पोर्टल की स्थापना
- देशी नस्लों के लिए राष्ट्रीय बोवाइन जीनोमिक केंद्र की स्थापना

5. जागरूकता कार्यक्रम:

- किसानों को पुरस्कार ("गोपाल रत्न") और ब्रीडर्स सोसाइटीज / संगठन ("कामधेनु") को पुरस्कार
- प्रजनन शिविरों का आयोजन

राष्ट्रीय गोकुल मिशन कि शुरुआत दिसम्बर 2014 से देशी नस्लों के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु की गयी। बिहार राज्य से राष्ट्रीय गोकुल मिशन के अंतर्गत 2015 एवं 2017 में आये प्रस्तावों को 133.26 करोड़ की राशी के साथ स्वीकृत किया गया है योजना अंतर्गत राज्य को 52.40 करोड़ की जारी की जा चुकी है। इसमें से राज्य के पास 44.90 करोड़ रूपये की राशी अव्यतित है। राज्य से उपयोगिता प्रमाण पत्र प्राप्त होने उपरांत 2018-19 के लिए राशि शीघ्र जरी कर दी जाएगी । यह योजना भारत सरकार के 100% अंशदान के साथ क्रियांविंत की जा रही है। स्वीकृत किये गए प्रस्ताव निम्न हैं।

- वीर्य केंद्र की पुर्णिया में स्थापना = 64 करोड़ की राशि स्वीकृत (भारत सरकार का 100% अंशदान)
- गोकुल ग्राम की बक्सर में स्थापना = 8 करोड़ की राशि स्वीकृत (भारत सरकार का 100% अंशदान)

- कृतिम गर्भाधान तंत्र का सुदृढीकरण= 53 करोड़ की राशि स्वीकृत (भारत सरकार का 100% अंशदान)
- पशु संजीवनी = 8 करोड़ (भारत सरकार का 60% अंशदान)

<u>वीर्य उत्पादन केंद्र, पूर्णिया</u>

आज राष्ट्रीय गोकुल मिशन के अंतर्गत बिहार राज्य के पूर्णिया जिले के मरंगा में 64 करोड़ रूपये की लागत से वीर्य केंद्र की स्थापना की जा रही है। इसमें 100% भारत सरकार अंशदान है। इसकी स्थापना के लिए 20 करोड़ रूपये की राशी जरी कर डी गयी है।

साथियों कृत्रिम गर्भाधान तकनीक द्वारा दूध उत्पादन एवं उत्पादकता बढाई जा सकती है । बिहार में कृत्रिम गर्भाधान का मुख्य कार्य कोम्फेड (सुधा) द्वारा किया जा रहा है । कृत्रिम गर्भाधान के लिए उच्च अनुवांशिक गुणवता वाले सांडो से वीर्य की आवश्यकता होती है ।

बिहार राज्य में बड़े पैमाने पर वीर्य उत्पादन करने का कोई केंद्र नहीं है । पटना में स्थापित वीर्य केंद्र की क्षमता कम है और यह गुणवत्ता वाले वीर्य का उत्पादन करने में भी सक्षम नहीं है। इसे भारत सरकार की केंद्रीय निगरानी इकाई द्वारा ग्रेड भी नहीं किया गया है। प्रदेश में 65 लाख पशु कृतिम गर्भाधान के लिए प्रति वर्ष उपलब्ध होते है। जिससे लिए प्रतिवर्ष 214 लाख वीर्य खुराकों की आवश्यकता होती है। अभी बिहार वीर्य खुराकों के लिए दूसरे राज्यों पर निर्भर है। और प्रदेश की नस्लों जैसे बछौर, गंगातीरी सीतामढ़ी एवं अन्य का वीर्य भी दूसरे राज्यों के पास उपलब्ध नहीं होता है। जिसके कारण इन नस्लों का संवर्धन नहीं हो पा रहा है। प्रदेश में एक बड़े वीर्य केंद्र स्थापना जरुरी है। इसका लाभ किसानो को सीधे तौर

पर मिलेगा। क्योकि वीर्य केंद्र दूध की उत्पादन एवं उत्पादकता से सीधा जुड़ा है। राज्य सरकार द्वारा अभी प्रति वर्ष 52 करोड़ रूपये राशी के वीर्य खुराको की खरीददारी होती है वीर्य केंद्र की स्थापना से इसकी बचत सीधे तौर पर होगी ।

यह देश का पहला सरकारी अत्याधुनिक वीर्य उत्पादन केंद्र होगा । केंद्र पर अतिआधुनिक बुल शेड, वीर्य प्रसंस्करण प्रयोगशाला, फीड और चारा गोदाम, कृषि उपकरण, एवं अन्य सुविधाओं का निर्माण होगा।

इस पर 300 उच्चय अनुवांशिक गुणवत्ता वाले सांडों को रखा जायेगा तथा 50 लाख वीर्य खुराको के उत्पादन की क्षमता प्रति वर्ष होगी। लाल सिन्धी, **बछोर, गंगातीरी, साहीवाल, नस्ल के सांडों को भी रखा जायेगा। इस वीर्य केंद्र की स्थापना से प्रदेश में गायों और भैंसों की दुग्ध उत्पादकता में तेजी से वृधि होगी।**

<u>गोकुल ग्राम</u>

बिहार राज्य अपनी देशी नस्ल बछौर, गंगातीरी एवं सीतामढ़ी नस्लों के लिए जाना जाता है। ये नस्लें राज्य में ही पली बढ़ी है और राज्य के वातावरण के लिए अनुकूल है। इन नस्लों के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए अभी तक कोई भी कार्य बड़े पैमाने पर नहीं किया गया। जिससे इन नस्लों की संख्या में कमी आई है और उत्पादकता का भी ह्रास हुआ है। ये नस्लें अधिकांशतः गरीब एवं भूमिहीन किसानों के पास है। अतः इन नस्लों के विकास से इन किसानों की आय को भी दुगना किया जा सकता है। गोकुल मिशन के अंतर्गत देशी नस्लों के विकास एवं संवर्धन पर पूरा ध्यान दिया जा रहा है। जिससे किसानों की आय में तेजी से वृधि की जा सके।

राष्ट्रीय गोकुल मिशन के अंतर्गत एक गोकुल ग्राम, बिहार राज्य के **डुमराँव**, बक्सर जिले मे स्थापित किया जा रहा है, उसके लिए **7.9 करोड़ रुपए** की राशि स्वीकृत की गयी है। इसमे से 5 करोड़ रुपए की राशी राज्य को जारी भी की जा चुकी है।

इस गोकुल ग्राम पर मूल रूप से **बछोर नस्ल के गोपशुयो को संरक्षित और विकसित करने का लक्ष्य रखा गया है। यह गोकुल ग्राम, 500 उच्च आनुवांशिक गुणों वाले पशुओं के लिए होगा और इनमे से 300 प्रजनन योग्य पशु होंगे।** इस गोकुल ग्राम पर बछोर के साथ साथ लाल सिंधी, साहिवाल एवं गिर नस्लों के पशुओं को भी रखा जाएगा। इस गोकुल ग्राम के द्वारा उच्च आनुवांशिक गुणों वाले पशुओं को किसानो को उपलब्ध कराया जाएगा। यह राज्य की देशी नस्लों के संरक्षण और संवर्धन मे मील का पत्थर साबित होगा।

<u>कृतिम गर्भाधान का फैलाव:</u>

बिहार गोकुल ग्राम और वीर्य केंद्र के साथ 1250 मैत्री (कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन), 4 नए कृत्रिम गर्भाधान प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना तथा तरल नाइट्रोजन (nitrogen) तंत्र का सुदृढ़ीकरण कर रहा है।
अब तक 500 नए मैत्री की स्थापना की जा चुकी है। जिससे 500 ग्रामीण पढ़े लिखे युवकों को रोजगार मिला है। इसके लिए कॉमफेड को 22.50 करोड़ रूपये की राशी जारी की गयी है।

इन्ही शब्दों के साथ मै पुन: आप सब का अभिनंदन करता हूँ और राज्य सरकार को पुर्णिया जिले मरंगा में वीर्य केंद्र की स्थापना के इस प्रयास पर बधाई देता हूँ ।

धन्यवाद ।